बाल भारती पब्लिक स्कूल, पीतमपुरा

अधिन्यास पत्र कक्षा - चौथी २१ .०४ .२०२०

विषय – व्याकरण उपविषय - चित्र वर्णन

<u>निर्देश:</u> -* चित्र का वर्णन ६० से ७० शब्दों में करें |

**** आप यह वर्णन वाक्यों के रूप में या अनुच्छेद के रूप में लिख सकते हैं |***

****चित्र वर्णन अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें |***

नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखें तथा उसका वर्णन अपने शब्दों में लिखें |

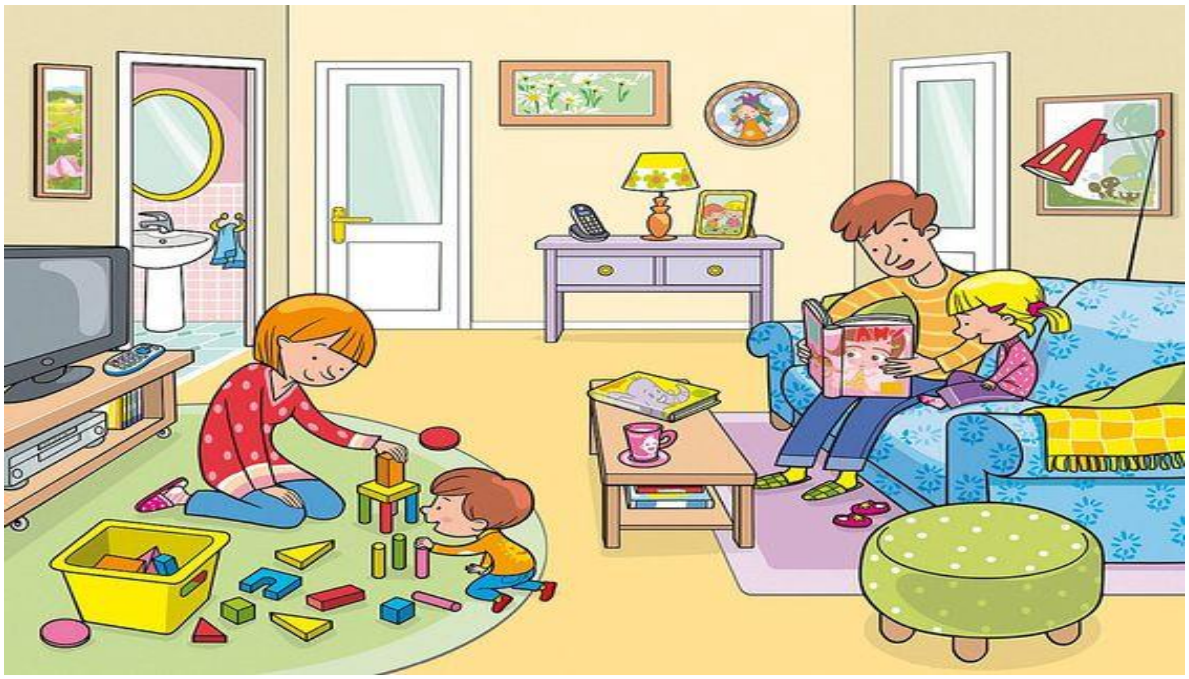

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____
_____
_____
_____
_____
_____

पिटारा पुस्तक की पहली कहानी "*नासमझी*" पढ़ें |

जीवन कौशल गतिविधि:

अपने खाली समय में पुराने समाचारपत्र की सहायता से अपनी उत्तर पुस्तिकाओं पर कवर चढ़ाना सीखें |

1 नासमझी

अधक देश का राजा बड़ा प्रतापी और दयालु था। राजा अपनी प्रजा के दुख स्वयं सुनता था और यथासंभव सहायता करता था। एक दिन एक व्यापारी अपने दो अंधे पुत्रों के साथ राजदरबार में आया। महाराज को प्रणाम करके व्यापारी ने कहा, "राजन, मैं इस समय बहुत संकट में हूँ। आप मुझे एक हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ ऋण के रूप में देने की कृपा करें। मैं छह महीने में आपका ऋण उतार दूँगा। मैं अपने इन दोनों पुत्रों को गिरवी रखने के लिए तैयार हूँ।"

यथासंभव = जितना संभव हो सके; संकट = मुसीबत

राजा और सभी दरबारी लड़के की योग्यता से बड़े प्रभावित हुए।

कुछ दिनों बाद एक जौहरी मूल्यवान जवाहरात लेकर राजा के पास आया। राजा ने एक बड़ा-सा चमकता हुआ सुंदर हीरा पसंद किया। हीरे की जाँच करवाने के लिए उसने व्यापारी के छोटे बेटे को बुलाया।

व्यापारी के अंधे बेटे ने हीरा अपने हाथ में लिया और कई बार अपनी हथेली पर उलट-पलटकर मला। फिर बोला, "महाराज, हीरा तो सचमुच बहुत कीमती है, पर यह अशुभ है। आप इसे न खरीदें। यह हीरा जिसके पास रहेगा उसके परिवार के सदस्यों की जान ले लेगा। जौहरी के परिवार के दो सदस्यों की जान यह ले चुका है।"

राजा और सभी दरबारी लड़के की योग्यता से बड़े प्रभावित हुए।

कुछ दिनों बाद एक जौहरी मूल्यवान जवाहरात लेकर राजा के पास आया। राजा ने एक बड़ा-सा चमकता हुआ सुंदर हीरा पसंद किया। हीरे की जाँच करवाने के लिए उसने व्यापारी के छोटे बेटे को बुलाया।

व्यापारी के अंधे बेटे ने हीरा अपने हाथ में लिया और कई बार अपनी हथेली पर उलट-पलटकर मला। फिर बोला, "महाराज, हीरा तो सचमुच बहुत कीमती है, पर यह अशुभ है। आप इसे न खरीदें। यह हीरा जिसके पास रहेगा उसके परिवार के सदस्यों की जान ले लेगा। जौहरी के परिवार के दो सदस्यों की जान यह ले चुका है।"

लड़के की बात सुनकर जौहरी बेतरह घबरा गया और राजा से क्षमा माँगने लगा। वह अपने जवाहरात लेकर चला गया। राजा व्यापारी के पुत्र से बड़ा प्रसन्न हुआ।

कुछ समय बाद व्यापारी वापिस आ गया। उसने राजा की हज़ार स्वर्ण मुद्राएँ लौटा दीं तथा अपने पुत्रों को साथ ले जाने लगा। तभी राजा ने पूछा, "तुम इन लड़कों के पिता हो। तुम्हारा गुण क्या है?"

"मैं आदमी की पहचान कर सकता हूँ," व्यापारी बोला।

"अच्छा, हमारी पहचान क्या है?" राजा ने पूछा।

व्यापारी ने बिना सोचे-समझे साफ़-साफ़ कह दिया, "आप एक चोर की संतान हैं।"

यह सुनते ही राजा आग बबूला हो गया, क्योंकि बात सच थी। उसने तुरंत पिता और पुत्रों को फाँसी पर लटका देने की आज्ञा दे दी। व्यापारी के मुँहफट होने तथा उसकी नासमझी के कारण तीनों को अपनी जान गँवानी पड़ी।